

OBSAH

| | Str. |
|------------------------------------|------|
| První list denníku | 5 |
| Vyčkávám | 7 |
| Jsem svůj | 9 |
| Růven králům | 11 |
| Zvětrat chci | 12 |
| Pokroučka | 14 |
| Svým | 15 |
| Kam jdu? | 17 |
| Noc bez svítání | 18 |
| Pták raněný | 20 |
| V život! | 21 |
| Stačí! | 23 |
| Mech | 24 |
| Zlatý den | 25 |
| Sluň se! | 26 |
| Co je žití, co je láska? | 27 |
| Zas! | 30 |
| Rozhovor | 31 |
| Jeseň | 33 |
| Sen skutečnost | 34 |
| Nemohu a nechci! | 35 |
| V bouři! | 37 |
| S bohem! | 38 |
| Zapadlé hroby | 41 |
| Různé cesty | 42 |
| Na zříceninách lásky | 43 |
| Rána zakrytá | 44 |
| Zapomenutí | 45 |
| Nové vření | 46 |
| Vrchol jara | 47 |
| Prchněme! | 49 |
| Co jsem? | 50 |
| Tebe chci! | 52 |

| | Str. |
|--|------|
| Svár | 53 |
| Modní sdružení | 55 |
| Po letech | 57 |
| Lék | 58 |
| Prosba | 60 |
| Zklamání | 61 |
| Král — žebrák | 63 |
| Kouzelnice | 65 |
| Sen | 67 |
| Kdo vinen? | 68 |
| Hrozno! | 69 |
| Pryč! | 70 |
| Co konat? | 72 |
| Chci zapomnět! | 73 |
| Hledám vykoupení! | 75 |
| V listopadu | 77 |
| Vino | 78 |
| Nad vše! | 79 |
| Radost z lásky, vína, života | 81 |
| Čert je vem! | 82 |
| Révy polibek | 84 |
| Ztratím se! | 85 |
| Reptač | 86 |
| Znáte-li mne dost? | 88 |
| Přítel | 89 |
| Vysvobození | 90 |
| Po zákonu duše | 92 |
| Zbloudil jsem! | 93 |
| Píseň | 96 |
| Faust | 97 |
| Poslání | 98 |
| Odkaz | 99 |
| I v nebi! | 100 |
| Otázka | 101 |
| Jen vesele! | 102 |



Oprava.

Na str. 69. v básni »Hrozno«, má v 2. sloze, verši 4. státi:
 »Kdo ylibá do čela snů štěstí sladký žel?«